फ़िल्म समीक्षा

यौनिकता पर काम के दौरान हमने निम्न फ़िल्में बहुत उपयोगी पाई हैं। इस फ़िल्मों की प्रति अर्जित करने के लिए आप जागोरी से मदद ले सकते हैं।

अनटोनियोज़ लाईन (1995)

निर्देशनः मारलीन गोरिस, **अवधिः** 102 मिनट

यह फ़िल्म पांच पीढ़ी की महिलाओं के सशक्त चित्रण के माध्यम से समुदाय में यौनिकता व बहुवादी पहचान विकलांगता, धर्म, पित्तसत्तात्मक दमन तथा यौन हिंसा पर औरतों के पक्ष को प्रस्तुत करती है।

हू कैन स्पीक ऑफ़ मैन (2003)

निर्देशनः अम्बरीन अल कदार, **अवधिः** 32 मिनट

यह वृत्तचित्र तीन मध्यवर्गीय मुस्लिम औरतों— चीनी, अरशिन व काफिला की केस स्टडी प्रस्तुत करती है जो पुरुषों की तरह कपड़े पहनती हैं व औरताना नियमों से विद्रोह करती हैं। इन तीनों केस स्टडी के ज़रिए समाज में मर्द व औरत की मान्य सामाजिक भूमिकाओं पर समझ बनाने की कोशिश की गई है।

बॉयज डोन्ट क्राय (1999)

निर्देशनः पीयर्स किंबरली, **अवधिः** 114 मिनट

यह फ़िल्म एक लड़की टीना ब्रॉनडन की सच्ची कहानी है। टीना एक लड़का बनकर रहती है और उसके पुरुष दोस्त उसके साथ बहुत खुश रहते हैं। उसकी महिला मित्र भी उसे संवेदनशील और स्नेहिल मानती हैं। जब टीना की सच्चाई का खुलासा होता है तब उसके पुरुष दोस्त उसका बलात्कार करते है। टीना के बलात्कार की रिपोर्ट पुलिस भी मानने से इंकार करती है और उसका मज़ाक बनाती है।

गुलाबी आईना (2003)

निर्देशनः श्रीधर रंगायन, **अवधिः** 40 मिनट

यह फ़िल्म बॉलीवुड के नृत्य, संगीत व ड्रामे के माध्यम से एक पश्चिमी 'गे' युवक और दो भारतीय 'ड्रैग क्वीन' के बीच संबंध को दर्शाती है। दोनों पक्ष एक नौजवान युवक को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। फ़िल्म भारत के गे समुदाय के आपसी मानवीय रिश्तों व संवेदनशीलता को उजागर करती है।

टेल्ज़ ऑफ़ द नाईट फ़ैरीज़ (2002)

निर्देशनः शोहिनी घोष, **अवधिः** 74 मिनट

इस फ़िल्म में पांच यौन कर्मी- चार महिलाएं व एक पुरुष फ़िल्मकार के साथ अपनी कहानियां बयान करती हैं। कोलकाता शहर की गलियों की पृष्ठभूमि में यह फ़िल्म यौन कर्म को काम का दर्जा देने के विमर्श पर चर्चाओं व सामूहिक संगठनात्मक शक्ति के प्रभाव की बात करती है।

इफ़ दीज़ वॉलज़ कुड टॉक (2000)

निर्देशनः जेन एंडरसन व मार्था कुलिज, **अवधिः** 96 मिनट

यह फ़िल्म 1960, 1970 व 2000 के समकालीन दौर में समलैंगिक मुद्दों का दस्तावेज़ीकरण है। यह समलैंगिक आन्दोलन, रिश्तों व उनकी जटिलताओं के बारे में समझ बनाने का प्रयास करती है।

नवरस (2005)

निर्देशनः संतोष सिवन, **अवधिः** 90 मिनट

तमिलनाडू के कूवागम त्यौहार के दौरान फ़िल्माई गई यह फ़िल्म अरावणी किन्नर समुदाय पर आधारित है। यह त्यौहार अरावणी किन्नरों की मौजूदगी का जश्न मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। अरावणी खुद को भगवान कृष्ण का अवतार मानते हैं।